समकालीन हिंदी कहानी: जीवन के यथार्थ के संदर्भ में

प्रीति

पी.एच.डी. शोधार्थी, हिंदी विभाग

श्रीधर विश्वविद्यालय

चिड़ावा, राजस्थान-333031

सारांश

कथा साहित्य हमेशा से ही एक सशक्त माध्यम रहा है जिसके द्वारा साहित्यकार अपने विचारों के यथार्थ अथवा कल्पना को कहानी में प्रकट करता है । मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ ही कहानी भी विकसित हुई है । कहानी मनुष्य की सामाजिकता की ही एक रचनात्मक अभिव्यक्ति है । कहानी सिर्फ आत्म अभिव्यक्ति का एक माध्यम नहीं है बल्कि वह उससे आगे बढ़कर मानवीय संबोधन और संवाद भी है । वेदों के संवादों और सूक्तों में, उपनिषदों के उपाख्यानों में, पुराण कथाओं में, रामायण और महाभारत में बोध और ज्ञान में नीती और धर्म की जो कहानियाँ मिलती है वे मनुष्य सभ्यता की आदिम युग से लेकर संस्कृति और समृद्धि तक की यात्रा के वृत्तांत हैं । इन कहानियों का उद्देश्य मनोरंजन से अधिक ज्ञान और आनंद से अधिक शिक्षा रहा है । कहानी को जीवन को समझने की कला और विधा के रूप में भी जाना जा सकता है । कथा साहित्य में मानव जीवन के यथार्थ को अलग-अलग तरीके से समझने का प्रयास किया जाता है; चाहे वह प्रेमचंद युगीन कहानी हो अ़कहानी या नई कहानी हो या फिर समानांतर कहानी हो । कथा साहित्य के इतिहास में समकालीन कहानी का अध्ययन भी हमें यही अवसर प्रदान करता है । समकालीन कहानी जीवन यथार्थ से सीधे टकराती हैं जो किसी भी परंपरागत मूल्य परिपाटी को नकारती हुई अस्तित्व बोध की गहरी जटिलता को अभिव्यक्त करती है ।

मुख्य शब्द : समकालीन कहानी, जीवन यथार्थ, अस्तित्व बोध, संक्रांतिकालीन चेतना, स्त्री लेखन

---

1. परिचय

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कहानी के क्षेत्र में ही नहीं समूचे साहित्य के क्षेत्र में जो एक जबरदस्त प्रवाह फूट पड़ा था, बस अपने आप में पूर्ववर्तियों की अपेक्षा बिल्कुल ही नया था। यह नयापन मात्र पाश्चात्य साहित्य के अनुकरण का फल नहीं था न ही रचनात्मक स्तर पर बौद्धिक बाजीगरी

। अपितु यह नयापन परंपरागत जीवन मूल्यों के विरोध में नए जीवन का एक ऐसा आक्रमण था
जहाँ हर पुरानी चीज अस्वीकृत की जाती है । इसलिए उस विशिष्ट संस्कृति युग में पैदा हुए कहानी साहित्य को नई कहानी या समकालीन कहानी से संबोधित करना कई दृष्टियों से उचित लगता है। आधुनिक युग यथास्थिति से चिपके रहने का युग नहीं है। युगीन संवेदनशीलता इतनी तीव्र गति से बदलती जा रही है कि हर नई व्यवस्था के जन्म के साथ ही उसकी मृत्यु के आसार नजर आते हैं।

आज की कहानी शहरी सभ्यताए स्त्री. पुरुष संबंधों की नई अवधारणाए त्रासदीए औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप संबंधों के बिखराव, यौन कुंठा, घिनौनी मानसिकता, अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष के भाव के भार को ढोती हुई दिखाई दे रही है। इससे शिल्प और भाषा दोनों ही स्तरों को तराशती हुई नए तेवर को लिए हुए आज की कहानी प्रयत्नशील दिखाई दे रही है।
आज की हिंदी कहानी निश्चित रूप से नए युग की सृष्टि है। अतः स्वभाव से ही उसमें संक्रांतिकालीन चेतना का स्तर सबसे तीव्र है। इसके अंतर्गत हर परंपरा की अस्वीकृति, प्रयोगशीलता, वैज्ञानिक दृष्टि और बौद्धिक जटिलता के साथ युग संत्रास को अस्तित्व के रूप में झेलने की क्षमता भी है।
स्पष्ट है नई कहानी आधुनिक जीवन की ह्रासोन्मुखी प्रक्रिया एवं विघटन के प्रति अपना तीव्र क्षेम प्रकट कर रही है। स्वतंत्रता के बाद परिवर्तन के जिस सत्य को तात्कालिक लेखकीय संवेदना अनुभूतियों का हिस्सा बनकर व्यक्त करना चाह रही थी, उसी संवेदना को समकालीन कहानी अधिक सफलता से प्रकट कर रही है।

दरअसल 20 वीं सदी के आखिरी दशक में उदासीकरण और भूमंडलीकरण ने समकालीन समय और समाज को गहराई के साथ प्रभावित किया। इसे आखिरी दशक के रचनाकारों ने गंभीरता के साथ अपनी रचनाओं में उठाया है । बाजारवाद के बढ़ने से दूर तक देश में चाहे वह संस्कृति ही क्यों न हो बाजार का हिस्सा होती गई भारतीय समाज के अंदर तक एक भिन्न प्रकार की चेतना का विकास हुआ जिसे कुछ लोग उत्तर आधुनिक समाज के रूप में देखते हैं और लोगों की जिंदगी में बदलाव आया । उस बदलाव के फलस्वरूप अकेलापन बढ़ा तथा आर्थिक अलगाव ने सामाजिक संबंधों को प्रभावित करना शुरू कर दिया । जमीनों के अधिग्रहण के कारण गांवों में परिवर्तन हुए और भूमंडलीकरण हुआ, मज़दूरों में असमानता बढ़ी और श्रम में स्त्रियों की भागीदारी बढ़ी । इन सभी परिवर्तनो ने व्यक्ति का मन बदला, मन ने विचार बदले तथा एक ऐसी समानांतर धारा का निर्माण किया कि परंपरा के साथ द्वंद्वात्मक रूप से विचार मंथन करना नए समाज का कार्य बन गया । यह समाज विकास की नई प्रक्रियाओं और भूमंडलीकरण की उपज है और इसका तंत्र इतना जटिल है कि आम आदमी और जीवन कब उसका हिस्सा बन गए यह पता ही नहीं चला । लेखक समाज का एक अहम हिस्सा होता है

इसलिए इन परिवर्तनों को रचनाकारों ने सबसे अधिक महसूस किया और इसी कारण हिंदी के समकालीन कहानीकारों ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम यह किया कि विकास की इन प्रक्रियाओं से गुजर रहे समाज और उसमें मनुष्य के अलग-थलग पड़ने की पीड़ा एवं जिंदगी के उस मार्मिक यथार्थ को पकड़ने की कोशिश की जो समाज वैज्ञानिकों से उनकी वस्तुवादी नज़रिए होने के कारण कई बार छूट जाती है । उदाहरण के लिए प्रेम कुमार मणि की खोज', हरी भटनागर की समीर और उसकी बस्ती के लोग', संजय खाती की 'पिंटी का साबुन', आदि ।

समकालीन कहानियों में जो दुनिया उभर रही है, उसमें रहने वाला व्यक्ति किसी भी व्यवस्था का गुलाम नहीं है वह यथास्थिति को भी स्वीकार नहीं करता, पर सक्रिय जरूर है, इसलिए इस दुनिया का व्यक्ति भविष्यवादी न होकर भी आने वाले भविष्य की खोज कर रहा है । इसी को कमलेश्वर ने आगतवादी कहा है । आस पड़ोस की अनुगूंज से युक्त ये कहानियाँ हमें आकर्षित करती हैं । अखबार की कतरनों के समान कभी-कभी हमारे एकदम निकट घटती सी लगती हैं । अमूर्त, प्रतीकात्मक या बिंबात्मक अवस्थाओं की उबड़-खाबड़ता से मुक्त होकर कहानी मानो अपना एक रचनात्मक समर्थन खोज रही है । मानवीय अवस्था मानवीय संकट बोध का ही परिदृश्य है । समकालीन कहानी असल में संकट बोध के विभिन्न पक्षों को विभिन्न ढंग से प्रस्तुत करती है । वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति धन का लोभी बनता चला जा रहा है वह किसी से भी पीछे नहीं रहना चाहता है वह समाज में दूसरे व्यक्ति से एक कदम आगे ही चलना चाहता है जीवन की सार्थकता मुख्यतः धन पर ही आश्रित हो गई है ।

समकालीन हिंदी कहानी की एक खास विशेषता कला और भाषा का ज़िन्दगी के यथार्थ के साथ गहरा संबंध भी है । कहानी कहने में शब्दों का चयन, शब्द संतुलन, शब्दों की यथार्थता जिस प्रकार कहानी का कारीगरी विभाग है, उसी प्रकार किस वस्तु को किस जगह पर रखें, किस रस को कितना विकास दें आदि बातें कला पक्ष में समाहित है ।

कहानी में शब्द की व्यवस्था और वस्तुगत यथार्थ के साथ उनके संबंध-कहानी कला का अहम हिस्सा है यानी कि कहानी ज़िंदगी के यथार्थ के करीब होने के कारण पाठक के अधिक करीब पहुंचती है ।

इस दौर में बदलते स्त्री-पुरुष संबंध, शहरी परिवेश, मध्यम वर्गीय परिवार का ताना बाना, पुराने और नए के बीच का संघर्ष नई कहानियों में कई प्रकार से उभरा । आजादी के बाद जो कहानियाँ लिखी गई उनमें नई बारीकियां, नए औजार और नए मानदंड व नए मापदंड अपनाए गए, व्यक्ति की केंद्रीयता बढ़ी, यथार्थ के प्रति आग्रह बढ़ा, वर्तमान की विसंगतियो और विद्रूपताओं का घनघोर चित्रण, बदलते स्त्री-पुरुष संबंध और स्त्री की स्वतंत्र अभिव्यक्ति, प्रेम की जटिलताएं, हताशा और मोह भंग, कामकाजी महिलाओं की समस्या, शहरी संस्कृति और बदलते मानव मूल्य, पूँजीवादी संस्कृति के प्रकोप, पूँजीवाद और प्रजातंत्र के गठजोड़ से उपजा भ्रष्टाचार जैसे विषय कहानी के जरिए उभरे जो निश्चित रूप से समकालीन परिवेश के दबाव से सामने आए । कहानी बदली कहने का रंग-ढंग बदला, निजता बढ़ी, सांकेतिकता को तरजीह दी गई, बारीकियां बढ़ी, वर्णन बहुलता घटी, बिंब प्रधान हुए, कहानी में कविता

जैसी सघनता पैदा हुई, भोगा हुआ यथार्थ और अनुभूति की प्रामाणिकता नई कहानी की कसौटी बनी ।

इस दौर में कहानीकार ने किसी भी तरह का आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं किया । बस एक साधारण मन की दुविधा को सामान्य ढंग से पेश कर दिया है । उदाहरण के लिए '9 साल छोटी पत्नी' , 'काला रजिस्टर' , 'बड़े शहर का आदमी' महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं जिनमें महानगरीय मध्यम वर्गीय युवा वर्ग की दिशाहीनता, उद्देश्यहीनता, व्यग्रता और भटकाव को चित्रित किया गया है । सिगरेट, शराब और सेक्स में डूबा यह वर्ग रवींद्र कालिया की कहानी का केंद्र है ।

समकालीन हिंदी कथा के क्षेत्र में आई स्त्रियों ने न केवल बौद्धिक जगत में हस्तक्षेप किया अपितु स्त्री केंद्रीय संगठनों और वामपंथी आंदोलनों से जुड़कर रचना और विचार की दुनिया में स्त्री की पहचान को स्थापित भी किया । मन्नू भण्डारी, मंजुल भगत, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, अर्चना वर्मा, रमणिका गुप्ता, मेहरून्निसा परवेज, अनामिका, कृष्णा अग्निहोत्री आदि इन स्त्री कहानीकारों ने समकालीन कहानी में स्त्री की सामाजिक अस्मिता को स्थापित करते हुए स्त्री लेखन को एक नई दिशा दी है ।

उदाहरण के लिए चित्रा मुद्गल 'लकड़बग्घा' कहानी में जहाँ परिवार और समाज से व्यवस्था के अंदर स्त्री को ज्ञान की परंपरा से जोड़ने की मांग करती है और न मिलने पर पितृसत्ता के खिलाफ़ उठ खड़ी होती है; वहाँ 'सिलिया' कहानी में सुशीला टाकभोरे की स्त्री नायिका स्त्री-पुरुष संबंध की सबसे मजबूत एवं पारंपरिक कड़ी विवाह को मानने से इंकार कर देती है । उसी प्रकार अर्चना वर्मा की 'जोकर' कहानी की बच्ची ये कहकर पाठकों को स्तब्ध कर देती है कि स्त्री समाज में पुरुष की क्या जरूरत है: "कितना अच्छा हुआ न अम्मू कि पापा पहले ही मर गए, और हमारे घर में दूसरा कोई मर्द भी नहीं है । आई थिंक आई एम लक्की । रियली लक्की ।" स्त्री समाज का कितना बड़ा यथार्थ है यह! समकालीन स्त्री कथाकारों ने अपने जीवन पर पुरुषों के अधिकार मानने से इंकार कर दिया है ।

2ण निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि समकालीन कहानी में किसी तरह का आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं किया गया है बल्कि एक साधारण मन की दुविधा को सामान्य ढंग से पेश कर जीवन यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है । कहानी के इतिहास पर ज़रा नजर डालें तो सहज अहसास हो जाता है कि कहानी अपने समय की दास्तान बयां करती है और इस प्रकार कल्पना का लबादा ओढ़ने के बावजूद सच के काफी निकट होती है । इस सत्य को प्रकट करने के लिए कहानी अपनी वेशभूषा, अपना रंग-रूप बदलती रहती है । जब-जब कहानी को नएपन की तलाश होती है तो वह पुरानी केंचुली उतार फेंकती है और नई को धारण करती

है । समय, परिवेश और विषय बदलता है तो कहानी कहने का अंदाज भी बदल जाता है ।

3. संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मदानए इन्द्रनाथः हिन्दी कहानीए पहचान और परख पृ. स. 169.170
2ण हिन्दी साहित्य में कहानी पृ.सं.46
3ण नवीन शोध संसार नीमचए मध्यप्रदेश
4ण तिलक पथिकश हिन्दी साहित्य का इतिहासए विनोद प्रकाशनए नई दिल्लीए 1989 पृ. स. 167
5ण इंटरनेशनल जर्नल्स ऑफ एडवान्स इन सोशल साईन्स
6ण हिन्दी साहित्य में कहानी पृ.सं.46
7. लीलाधर मंडलोई : श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ(1970 -1980)
8. रविन्द्र कालिया : वर्तमान साहित्य , कहानी महाविशेषांक, अप्रैल और मई 1991(दो भाग) सेवकराम यात्री, विभूतिनारायण राय,
9. गंगा प्रसाद विमल : समकालीन कहानी का रचनाविधान, सुष्मा पुस्तकालय, दिल्ली 1967
10. मानव मूल्य और साहित्य, डॉ धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
11. हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, डॉक्टर रमेश चंद्र लवानिया, 1993, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद